

ISSN : 2229-5550

नाट्यम् 82-83

जुलाई-दिसम्बर, 2017



ISSN : 2229-5550

नाट्यम् 82-83

जुलाई-दिसम्बर, 2017

रंगमंच एवं सौन्दर्यशास्त्र की त्रैमासिक शोधपत्रिका

संस्थापक एवं प्रधान संपादक

राधावल्लभ त्रिपाठी

संपादक

आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

प्रबन्ध संपादक

सञ्जय कुमार

संपादक मण्डल

नौनिहाल गौतम

रामहेतु गौतम

शशिकुमार सिंह

किरण आर्या

प्रकाशक

नाट्य परिषद्, संस्कृत विभाग

डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

नाट्यम्

रंगमंच एवं सौन्दर्यशास्त्र की त्रैमासिक शोध पत्रिका,

अंक : 82-83, जुलाई-दिसम्बर, 2017

ISSN : 2229-5550

नाट्य परिषद् (पंजीकरण क्र. 100066)

संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

दूरभाष-फैक्स (कार्यालय) 07582-264366 पिन-470 003

Natyam : A Quarterly Journal of theatre and aesthetics
published by Natya Parisad. Deptt. of Sanskrit,
Doctor Harisingh Gour University, Sagar,
Madhya Pradesh-Pin-470 003. India.
Phone-Fax (off.) : 07582-264366

सदस्यता शुल्क :

प्रत्येक अंक - 25/- रु., वार्षिक - 100/- रु.

आजीवन (प्रति व्यक्ति) - 1000/- रु.

आजीवन (प्रति संस्था) - 5000/- रु.

यह शुल्क मनीआर्डर, चेक या नगद दिया जा सकता है
जो नाट्य परिषद् सागर के नाम देय होगा।

पत्रव्यवहार :

प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

अध्यक्ष, संस्कृत विभाग

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003

e-mail : sanskritsagar1946@gmail.com

© सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रण : अजय जैन, अमन प्रकाशन नमक मंडी,
कटरा, सागर (म.प्र.) मो. 9826434225

नाट्यम् में प्रकाशित नाटकों के अनुवादों/रूपान्तरों या किसी भी अन्य सामग्री की किसी भी रूप में प्रस्तुति
के लिए नाट्य परिषद् से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।

प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति अथवा विचारों से नाट्य परिषद्, संपादक या संपादक मंडल की सहमति
अनिवार्य नहीं है।

सूचना - आजीवन ग्राहकों को डाक व्यय 250 रु. (दो सौ पचास रुपये मात्र) पर नाट्यम् के उपलब्ध पुस्तकें
अंक भी निःशुल्क देय हैं।

अनुक्रम

विरासत -

1. उत्तररामचरित के विविध पक्ष 9
रामजी उपाध्याय
2. हर्ष के रूपकों की भाषा शैली एवं अभिनेयता 40
गोकुलप्रसाद त्रिपाठी

सम्वाद -

3. नाट्यशास्त्र के मर्मज्ञ प्रो. विश्वनाथ भट्टाचार्य से सारस्वत संवाद 76
वत्सला

मूल्यांकन -

4. संस्कृत रंगमंच : परम्परा तथा सम्भावनाएँ 89
जनार्दनप्रसाद पाण्डेय 'मणि'
5. नाट्य परम्परा: आदि से अद्यतन 94
लक्ष्मी पाण्डेय
6. नाट्यशास्त्रीय परम्परा में रसानुभूति 105
पूनम यादव
7. आधुनिक संस्कृत रूपक साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ 112
कपिल गौतम
8. अभिज्ञानशाकुन्तल 125
बसन्त कुमार भट्ट
9. शम्बूकाभिषेकम् में शम्बूक 139
आनन्द कुमार श्रीवास्तव
10. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से ऊर्जस्वित वीरप्रतापनाटक 146
अजय कुमार मिश्र

5

नाट्य परम्परा : आदि से अद्यतन

लक्ष्मी पाण्डेय

‘काव्येषु नाटकं रम्यम् ।’ यूं तो-

नाटक काव्य के दो भेदों- दृश्य और श्रव्य में से दृश्य-काव्य के अंतर्गत आता है किन्तु हम इसे पुस्तकों पत्र-पत्रिकाओं में पढ़कर तथा रेडियो पर-रेडियो रूपक और रेडियो नाटक के रूप में सुनकर भी आनंदित तथा शिक्षित होते हैं। काव्य की यह अत्यन्त रमणीय विधा है। मन को रमाने, मग्न करने के लिए यह कुशल अभिनय तथा सहजग्राह्य-बोधगम्य साथ ही सशक्त भाव प्रवण भाषा का आश्रय लेता है। संस्कृत में रूप के आरोपण के कारण इसका नाम रूपक पड़ा। ‘साहित्य दर्पण’ में आचार्य विश्वनाथ कहते हैं- ‘रूपारपान्तु रूपकम् ।’

तथा आचार्य धनन्जय कहते हैं- नाटक अवस्था का अनुकरण है अतः-
-‘अवस्थानुकृतिर्नाट्यम् ।’

समाज को लोक को उचित-अनुचित का ज्ञान हो तो व्यवस्था और अनुशासन बना रहता है। जीवन में, संसार में शांति-सरसता बनी रहती है। इस उचित-अनुचित का ज्ञान कराने वाली सशक्त विधा नाटक है। अनौचित्य जीवन और साहित्य में रस भंग करता है। आचार्य क्षेमेन्द्र के अनुसार-‘औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम् ।’ अर्थात् औचित्य (उचित) ही रस सिद्ध काव्य का स्थिर जीवित है। औचित्य का ज्ञान कराने तथा अनौचित्य से रक्षित करने, बचाने के लिए शास्त्र की रचना हुई। ‘नाट्य शास्त्र’ इसी उद्देश्य को लेकर अस्तित्व में आया।

वेदों के रचयिता ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना के साथ ही नाटक का सूत्रपात किया। वेदों के पश्चात् नाट्यशास्त्र की रचना हुई। आचार्य भोताराम शर्मा के अनुसार- “नाट्यशास्त्र की रचना 500 वर्ष विक्रम पूर्व से लेकर 100 ई. पश्चात्